दिल्ली घराना

- सिद्धार खाँ इस घराने के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- इनका जन्म 1780 ई० के लगभग हुआ
- समकालीन कलाकार –
  - सदारंग, खुसरो खाँ, नवाजी सिंह
- सिद्धार खाँ के तीन पुत्र – घसीट खाँ, बुगरा खाँ,
- मोदू खाँ और बख्शू खाँ से ~~दिल्ली~~ लखनऊ घ… स्थापित हुआ
- बुगरा खाँ के दो पुत्र – सिताब खाँ, गुलाब…
  (दिल्ली घराना को आगे…
- उ० मुनीर खाँ – सिद्धार खाँ के दौहित्र ~~…~~ बड़े का… खाँ के पुत्र – काले बख्श, पौत्र नत्थू खाँ ~~खाँ~~ उनके शिष्य उ० मुनीर खाँ उनके शिष्य अहमदजान थिरकवा, चाँद खाँ, निखिल घोष, अता हुसैन खाँ, जगन्नाथ बुवा, गुलाम रसूल, तथा डा० आबान ई० मिस्त्री (बम्बई)
- बुगरा खाँ के शिष्य – लतीफ अहमद खाँ, फैयाज…
- शिष्य परम्परा में उ० कल्लू खाँ और उ० मीरू खाँ जो ~~बड़े काले खाँ~~ उ० सिताब खाँ के शिष्य थे ~~इन्होंने~~ इनसे की अजराड़ा घरा… का ~~प्र~~ जन्म हुआ।

दिल्ली इसे सर्वप्रधान तबले का घराना बना

इस बाज में – पेशकार, कायदा, रेला, मुखड़ा, मोहरा, टुकड़ा, विशेष जोड़ वाले बोल –

तिनकिन, धा धा, तिरकिट, धागेन, धा तिरकिट धाति धागे धातिगेन

दो अँगुली द्वारा बजने वाले बोल –

घिट, तिट, धा, ता, धागे, ताते, धागेन, तागे, घिनक, तिनक, घिटघिट, घिनघिन, तिनकिन